मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ○ सलंग अंक १५१ ○ नवम्बर-२०१९

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

Praful Kharsani

अपने मंदिरो में नूतन वर्ष ठाकोरजी के अन्नकूट दर्शन

कालुपुर

छपैया

जेतलपुर

न्यु राणीप

नाथद्वारा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १३ ● अंक : १५१

नवम्बर-२०१९

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७

प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए

फोन : २७४९९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ८२३८००१६६६

मो. ९०९९०९८९६९

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	सिंहासन की स्थापना	०६
०४.	हे गोपीनाथजी मेरा कष्ट दूर करें	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०६.	सत्संग बालवाटिका	१९
०७.	भक्ति सुधा	२१
०८.	सत्संग समाचार	२५

अस्मदीयम्

'श्री स्वामिनारायण' मासिक के सभी वाचको को नूतन वर्ष की शुभेच्छाओं के साथ जयश्री स्वामिनारायण।

हम अपना जीवन इस तरह से जीए की दुसरों को काम आए । एक मनुष्य होने के नाते सबका भला हो एसा हमारा जीवन एक सुगन्धमय पुष्प जैसा होना चाहिए । हमारे संप्रदाय की श्रीहरि लिखित पावन 'शिक्षापत्री' में सभी की फर्ज लीखी हैं । हम सभी लोग प्रातःपूजा में रोज पढते है । लेकिन अगर उसका पालन सहीरुप से करेंगे तो फिर कोई समस्या ही खडी नहीं होगी । और उसमें प्रशासन के नियम भी सम्मीलीत है । हमारे इष्टदेवने हमें जीवन में सुखी होने के लीए एक छोटी सी लेकीन अलौकिक एवं महान 'शिक्षापत्री' भेट के तोर पर दी है ।

अगर हमनें यह शिख लीया की हम भगवान को कीस तरह से प्रसन्न कर शके तो फीर हमें और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है । वचनामृत (का.-१०) में महाराजने कहा हैं की हमारा तो एकी ही इश्क और सिद्धांत है की तप-साधना करके ईश्वर को खुश करना हैं अतः भगवान को ही हम सब कुछ मानकर एक सेवक की तरह भगवान की भक्ति करनी हैं और कीसी भी रुप से भगवान की उपासना खंडीत नहीं होने देना हैं ।

उक्त श्रीहरि के वचनामृत के यह अमृतमय वाक्य को हम अपने जीव के साथ जोड दे तो फिर हम अवश्य ही मोक्ष एवं कल्याण के पात्र बनेंगे । इस साल बारीस बहुत अच्छी रही । सभी बड़े तालाव, नदीयाँ और डेम पानी से भर गये हैं । लेकिन बीना-मौसम की अतिरीक्त बारिस की वजह से सूतर, मुंगफली, बाजरी इत्यादि पाक निष्फल हो गये हैं । श्रीहरि के चरणोमें यह प्रार्थना की प्रशासन इस नुकशान का जांच करके और सभी किसानो की मुआवजें की माँग पूरी हो ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

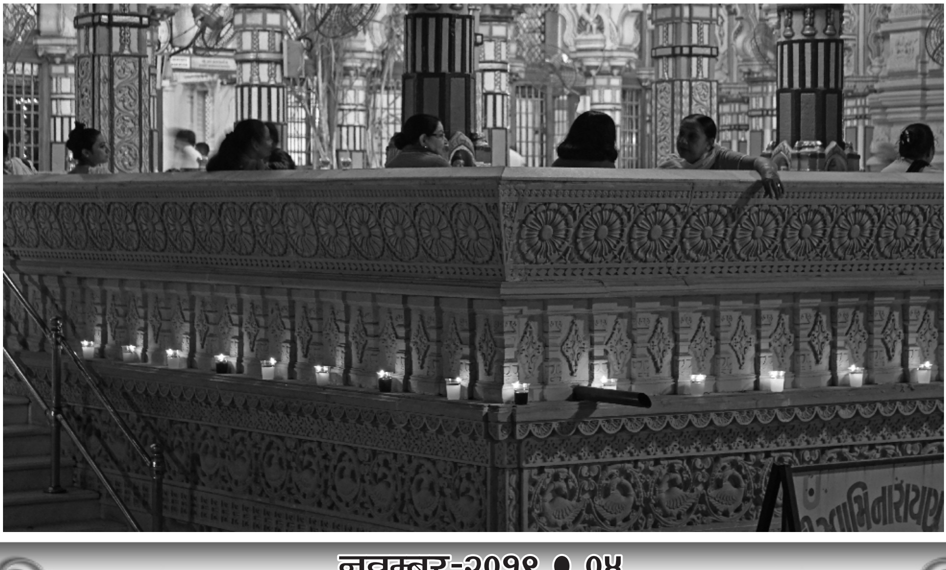

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१९)

५-८ श्री स्वामिनारायण मंदिर, टोरन्टो (केनेडा) में ११ वें पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

२० डेमाई (त. बायड) गाँव में सत्संग सभा के अवसर पर आगमन।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर, बालासिनोर में पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

(अक्टूबर-२०१९)

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर, गांधीनगर सेक्टर-२ में आगमन

५ प.भ. सुरेशभाई ठक्कर, प.भ. रतिभाई पटेल, प.भ. भावेशभाई भावसार थलतेज के घर पर आगमन।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर, माणसा (नूतन मंदिर) में सत्संग सभा के अवसर पर आगमन।

८ ४७ वें प्राकट्योत्सव के अवसर पर श्री स्वामिनारायण बाग से संत-पार्षद मंडल के साथ श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पदयात्रा संपन्न की।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर में अ.नि.प.भ. वर्षाबहन पाठक (लंडन) की स्मृति में आयोजित कथा-पारायण की पूर्णाहुति अपने वरद् हस्त से संपन्न की।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर में आयोजित चोपडा-पूजन अपने वरद् हस्त से संपन्न कीया।

२८ नूतन वर्ष के दिन श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आर्ती और अन्नकूट आरती अपने वरद् हस्त से संपन्न की।

३० महादेवपुरा छाला में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर के खात-मुहूर्त के अवसर पर आगमन।

३१ आजोल गाँव में कथा-पारायण के अवसर पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१९)

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर जलझीलणी एकादशी की श्री गणपतिजी शोभायात्रा अपनी शुभ निश्रामें संपन्न हुए।

(अक्टूबर-२०१९)

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर में अ.नि.प.भ. वर्षाबहन पाठक (लंडन) की स्मृति में आयोजित कथा-पारायण की पूर्णाहुति अपने वरद् हस्त से संपन्न की।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर में कालीचौदश के दिन श्री हनुमानजी का पूजन-आरती अपने वरद् हस्त से संपन्न हुए।

२८ नूतन वर्ष के दिन श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आर्ती और अन्नकूट आरती अपने वरद् हस्त से संपन्न की।

सिंहासन की स्थापना

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भगवानजी वराह अवतार धारण करके दिति के पुत्र हिरण्याक्ष का वधकिये थे । उसका छोटाभाई हिरण्याकश्यप भगवान नारायण से बैर का भाव रखकर द्रोह करने लगा था । अनंत शक्तियो के स्वामी परमब्रह्म का मुकाबला करने के लिये ३६ हजार वर्ष कठोर तपश्या करके ब्रह्मा से एक सौ वरदान तथा अजर-अमर होने की सुरक्षा प्राप्त कर लिया था । हिरण्यकश्यप धर्म, धर्मस्थानो, धर्मधारण करने वाले को परेशान करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दिया था । ब्रह्माजी के वरदान के नाते हिरण्यकश्यप को लोग परेशान नही करते थे । तव देव लोग ब्रह्माजी से विनंती किये । सब लोग शेष शैया धारीश्री नारायण भगवान के पास सभी लोग गये ।

परम ब्रह्म परमात्मा धर्म की रक्षा हेतु ब्रह्माजी के वरदान की महिमा न घटे उसका ध्यान रखकर हिरण्यकश्यप ने पुत्र भक्त प्रहलाद को मारने के लिये तलवार उठाया उसी राजमहल में परमब्रह्म नृसिंहरुपधारण करके जो आधी शरीर मानव आधा विकरालसिंह का रुप धारण करके गर्जना के साथ खम्बे में से प्रगट हुए । वह वैशाख सुद-चौदस तिथि के दिन जब शाम हो रही थी । जन्मजन्मान्तर के कर्म का हिसाब पूरा करने के लिये राजमहल के बारजे के नीचे हिरण्यकश्यप को गोद में लेकर अपने तीखे नखो से उसका पेट चीरकर प्राण तत्व का पान करने के लिये तैयार हुए । तब नृसिंह महाराज बोले असुर ! तुमने हमारे भक्त प्रहलाद से द्रोह करके सभी अच्छे फलो का भाव खतम कर चुके हो । आज निर्णय करता हूँ अब कोई वरदान तुम्हारी रक्षा नही कर पायेगा । ऐसा बोलकर हिरण्यकश्यप का कल्याण किये । तब त्रिलोको के निवासी खुश सुखी हो गये ।

भगवान नरसिंह के प्रगट होने से त्रिलोक की एक समस्या समाप्त हुई । लेकिन दूसरी समस्या आ गई । नृसिंह भगवान के क्रोधको शांत करने के सभी प्रयास निष्फल हुए । नरसिंहवतार प्रहलाद को छोडकर जो सामने आता उसी मारने दौडते थे । ब्रह्मा आदि देव क्रोधशांत करने में असफल रहे । तब सभी देव कैलासपति महादेव के शरण में गये । तथा नरसिंहवतार से मुक्ति के लिये प्रार्थना करने लगे ।

आज समय ऐसा आ गया । आँख लाल, जीभ बाहर वाली आकृतिवाले नरसिंह अवतार की सभी सीमा पार कर दिये थे । भगवान शिवजी अपने मुख्य सेवक

गणदेव वीर भद्र को नृसिंहवतार को वस में करने के लिये भेजे। उसने लाखो प्रयास किया लेकिन निष्फळ रहे। तब त्रिलोकी की रक्षा की जिम्मेदारी सम्भालने वाले महादेव रक्षा के कारण ''सरभ अवतार'' धारण किये। मानव-पशु-पक्षी के प्रकार के मिश्र शरीर का सर्वेश्वर रुप धारण किये ''सरभ'' एक पक्षी की योनि है। उसके दो विशाल पंख, आठ पैर, चार भूजा वाले शरभ पक्षी सिंह से मजबूत होते है। शरभावतार शिव नृसिंह अवतार विष्णु दोनो सामने आकर लडने लगे थे। प्रलय कारी ध्वनि ब्रह्मांड फट जाये ऐसी आवाज हो रही थी। इन दोनो के अलावा सभी लोग डर गये थे। त्रिलोकी काँपने लगे। युद्ध में शरभेश्वर देव अपने विशाल पंखो से नरसिंहदेव के क्रोधको शांत करने लगे। लेकिन सफलता नही मिली। शरभेश्वरने अपने पंख में से एक शक्तिशाली देवी को उत्पन्न किये। वह देवी भी माया द्वारा भी नरसिंह अवतार का क्रोधशांत नही कर पाई।

महाकालादेव शरभेश्वर और नृसिंहदेव का युद्ध १८ दिन तक चला था। अंत में शरभेश्वर अपने मूल रुप में आकर श्रीनारायण की स्तुति करने लगे। नरसिंहदेव तत्काल शांत होने लगे। जैसे-जैसे प्रार्थना करते गये। वैसे विकराल रुप शांत रुप में आने लगा। तब नरसिंह देव शरभेश्वर से दीन बचन बोले हे देव माँगे-माँगे। तब शरभेश्वर दोनो हाथ जोडकर बोले आप अपने दिव्य नरसिंह अवतार का (चर्म) दे। मैं उस पर बैठकर तपस्या करूँगा। शरभेश्वर की विनती सुनकर अनपे शरीरका त्याग करने के लिये तैयार हो गये। बोले भोले मैं शरीर का त्याग कर रहा हूँ। इस चर्म पर बैठकर तपस्या करना। आप की तपस्या फलदायी होगी। इस आकार में जो आप का दर्शन करेगा। उसकी मनोकामना पूरी होगी। चारो पुरुषार्थ प्राप्त होगा। भगवान नृसिंह विधिवत अपना अवतार का कार्य पूर्ण करके शरीर का त्याग कर दिये।

और उस नृसिंह भगवान की चर्म (छाल) लेकर शिवजी कैलास पर आ गये। तभी से भोलेनाथ सिंह के छाल पर आसन लगाकर रहते है। इसी कारण से चाहे विष्णु हो या भोले सभी का सिंहासन पर स्थापना की जाती है। प्रतिदिन पूजा-विधिकी स्थापना में सिंहासन की कल्पना की जाती है। भगवान की अचल स्थापना मंदिर के आसन उपर नृसिंह की आकृति बनाई जाती है। नरसिंह के मूल आकार को आसन पर बनाया जाता है। मूर्ति के नीचे जो आधार नृसिंह अवतार का रुप सिंहासन कहा जाता है।

भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु लोया वचनामृत में कहते है कि ''प्रहलाद जो नृसिंह के बारे में बोले है। हे महाराज ! मैं आप के विकराल रुप से भयभीत नही। आप मेरे ईन्द्रिय रुपी शत्रु का नाश करे। तब मैं आभार मानूगा। तथा वचनामृत ग.म. १३ तथा लोया १४ में तेज के मध्य भाग में एक बड़ा सिंहासन है। जिसके उपर दिव्यमूर्ति नारायण पुरुषोत्तम भगवान बिरामजान है। उसी प्रकार लोया-१८ में शिव शरभेश्वर महादेव हुए तथा नृसिंह देव जहाँ पर शरीर त्यागे वह नारसिंही शिला हुई।

सिंहासन में भगवान श्री नृसिंहावतार के रुप का आवाहन और पूजा की जाती है।

मागसर वद अमावस्य के ग्रहणका पालन करना हैं

सं. २०७६ मागसर वद अमावस्य, दिनांक २६-१२-२०१९ गुरुवार

ग्रहण स्पर्श सुबह ८-०० बजे

ग्रहण मध्य सुबह ९-२० बजे

ग्रहण मोक्ष सुबह १०-५५ बजे

इस ग्रहण का वेधदिनांक २५-१२-२०१९ बुधवार रात्री के ८-०० बजे से शुरु होता है। उसके बाद भोजन नही करना है। ग्रहण पूरा होने के बाद स्नान, पूजा, पाठ, दान इत्यादि करने के बाद भोजन करना हैं।

- भरतभाई शास्त्री

हे गोपीनाथजी मेरा कष्ट दूर करें

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ ठुमरी रागेण गीयते ॥

हर हर गोपीनाथ मम कष्टम् । हर.... (ध्रुवपदम्)
सुरनर मुनिवर जलधरसुन्दर । मारमहामदमार । मम...१॥
राजीवलोचन पापविमोचन । दुर्गपुरीसुविहार । मम...२॥
हाटकभूषण हतजनदूषण । दिव्यगुणालयसार । मम...३॥
वृषकुलनायक सुरसुखदायक । कुन्दकुसुमशुभहार । मम...४॥
मंगलकारण गतिजितवारण । प्रेमवतीसुकुमार । मम...५॥
मानसमोदन दितिसुतरोदन । भूमिनिवारितभार । मम...६॥
विश्वविभावन दुर्मतिपावन । कालदवानलहार । मम...७॥
सुरकुलरंजन नित्यनिरंजन । भानुसुतावितनार । मम...८॥
ब्रह्मपुरासन जनहितशासन । निष्कामानन्दनिधान । मम...९॥
॥ इति निष्कामानन्दवर्णिविरचिता अष्टपदी समाप्ता ॥
हर हर गोपीनाथ मम कष्टम् । हर.... (ध्रुवपदम्)

भगवान श्री स्वामिनारायण घोर कलियुग में प्रगट होकर संसार सागर में महान दुःख और कष्ट भोगते जीवो के कल्याण के लिये अपने चार संकल्पो में से प्रथम संकल्प महामंदिरो का निर्माण करना । उसकी पूर्ति करने के लिये । इस पृथ्वी पर नव महामंदिरो की स्थापना करके उसमें अपने स्वरुप के विविधनाम और आकृति वाले की स्थापना किये । उसमें स्थित श्रीहरि के दिव्य स्वरुपो में पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण का दर्शन करते परमहंसो के स्वरुप उसमें से एक स्तुति प्रार्थना निष्कामानंदवर्णी श्री गोपीनाथजी महाराज के समक्ष जो स्तुति संस्कृत में की गयी है । जिसे हमारे सम्प्रदाय में अष्टक नाम से जानते है । वह अष्टक हर-हर गोपीनाथ अधिक गाया जाता है । और प्रसिद्ध भी है । उनके शब्दो को अर्थ समझने का प्रयास करते है ।

सुरनर मुनिवर जलधरसुन्दर । मारमहामदमार । मम...१॥

अपने और जीवमात्र के जीवन में आने वाले अनेक कष्टो-दुःखो को दूर करने के लिये अपने ईष्टदेव अर्चास्वरुप बिराजमान है । ऐसे गोपीनाथ परमात्मा से विनंती रुप में प्रार्थना करने के लिये हर हर दूर करो दूर करो इस तरह पुकार कर कहने के लिये शब्द का दो बार उपयोग किये है । वे हरि यहाँ पर प्रत्यक्षरुप में गोपीनाथ नाम से विराजमान है । गोपी अर्थात् कोई स्त्री नही वह जो जीवात्मा अपने सभी ईन्द्रियो की वृत्ति को विषयो में से पीछे लाये तथा ईष्टदेव के रुप से जोडकर रखे । वह जीव मात्र के लिये नाथ अर्थात् सभी प्रकार से रक्षा करने वाले भरण पोषण करने वाले नाथ ऐसे हमारे ईष्टदेव परमात्मा श्रीहरि है । जिसका सभी देवऋषि भक्ति करते है । उनकी सुंदरता ऐसी है कि अषाढ मास के नये बादल पानी युक्त वाले रंग जैसा श्याम रंग है । जो कामदेव के गर्व का नष्ट करने वाला है । वे सम्पूर्ण ब्रह्मांड में एक ही है । जिसकी कामदेव से तुलना का पराभव है । ऐशे हमारे ईष्टदेव गोपीनाथ नाम धारी भगवान श्री स्वामिनारायण महारे सभी

कष्टो दुःखो आध्यात्मिक, आदिभौतिक आदिदैविक जन्म-मृत्यु जरा व्याधिमोह माया अज्ञानता से दूर करे। (१)

राजीवलोचन पापविमोचन। दुर्गपुरीसुविहार। मम...२॥

जल से परिपूर्ण सरोवर के जो राजा है। कमल के समान श्रेष्ठ आँखे है। जो उनके पास आता है। उसे पापो से मुक्त करते है। तथा मोक्ष प्रदान करते है। ऐसे परमात्मा गढपुर में रह कर अपने आश्रितो को मोक्ष देने के लिये विचरण करते हे। ऐसे हमारे ईष्टदेव गोपीनाथ धारण करके भगवान श्री स्वामिनारायण हमारे समस्त कष्ट, दुःख, आध्यात्मिक, आदि भौतिक, आदि दैविक जन्म-मृत्यु जरा व्याधि, मोह, माया, अज्ञान, वासना आदि से दूर करें। (२)

हाटकभूषण हतजनदूषण। दिव्यगुणालयसार। मम...३॥

आपके आसरे भक्तो को मन में आप की मूर्ति के प्रति जुडने के लिये स्वयं अति सुंदर सोने के गहनो से अलंकृत है। जो भी आश्रित है। वे सुंदर मूर्ति का दर्शन करते है। उसके सभी प्रकार के दोष अवगुणो को दूर करके नाश करते है। और उनमें दिव्य गुण देते है। वे स्वयं सभी सद्गुणो को आश्रय स्थल है। ऐसे मेरे ईष्टदेव गोपीनाथ नाम धारी भगवान श्री स्वामिनारायण मेरे पूरे कष्ट दुख आध्यात्मिक, आदि भौतिक, आदि दैविक, जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, मोह, माया, अज्ञान वासना आदि से दूर करें। (३)

वृषकुलनायक सुरसुखदायक। कुन्दकुसुमशुभहार। मम...४॥

हरिप्रसाद विप्र जो धर्मदेव के नाम से प्रसिद्ध है। अपने कुल वंश के नायक है तारणहार है। जो ध्रम का आचरण करते है। तथा पालन भी करते है। वे सभी को तारते है। सात्विक आचरण वाले सुर-देवातओ को सदैव सुख देते है। जो अपने गले में स्वर्ण ती तरह तेजस्वी पोषण के फूल का हार धारण करते है। ऐसे हमारे ईष्टदेव गोपीनाथ नाम धारण करके भगवान श्री स्वामिनारायण मेरे समस्त कष्टो, दुःखो, आध्यात्मिक, आदि भौतिक आदि दैविक जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, मोह, माया, अज्ञान, वासना को दूर करे। (४)

मंगलकारण गतिजितवारण। प्रेमवतीसुकुमार। मम...५॥

पूरे जगत का सभी प्रकार से मंगल करना जिसका कारण है। अर्थात् सभी का कल्याण करने के लिये जो अवतार धारण किये है। जिसका मानव शरीर इतना सुंदर है। चलने की कला ऐसी है। जो मदमस्त हाथी की चाल को भी फीका कर दे। उससे अच्छी चाल है। जिनकी माता भक्तिदेवी जो साक्षात् प्रेम की मूर्ति है। उनके पुत्र रुप में अवतार धारण किये है। ऐसे हमारे ईष्टदेव गोपीनाथ नामधारी भगवान श्री स्वामिनारायण मेरे सम्पूर्ण कष्टो दुखो, आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आदि वैदिक जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, मोह, माया, अज्ञान, वासना आदि से दू करो। (५)

मानसमोदन दितिसुतरोदन। भूमिनिवारितभार। मम...६॥

इस दिव्य सुंदर मूर्ति का दर्शन करने वाले अपने भक्तो को सदा आनंद प्रमोद देते है। और आसुरी प्रवृत्ति वाले दानवो दैत्यो को दण्डदेकर उन्हे फल प्रदान करते है। वे पृथ्वी पर अधर्म-पाप का नाश करते है। ऐसे हमारे इष्टदेव गोपीनाथ नाम धारी भगवान श्री स्वामिनारायण हमारे सभी कष्टो, दुःखो, आध्यात्मिक, आदि भौतिक आदि दैविक जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, मोह, माया, अज्ञान, वासना को दूर करे। (६)

विश्वविभावन दुर्मतिपावन। कालदवानलहार। मम...७॥

सम्पूर्ण विश्व के जीवो का भरण-पोषण करने वाले और मोक्ष प्रदान करने वाले है। दुष्ट-आसुरी वृत्ति वाले जो आपके शरण में आ जाते है। उसे पावन-पवित्र करके आश्रित बना देते है। उन्हे काल के भय से निर्भय कर देते है। ऐसे हमारे ईष्टदेव गोपीनाथ नाम धारण किये भगवान श्री स्वामिनारायण मेरे सम्पूर्ण

कष्टो, दुःखो, आध्यात्मिक, आदि भौतिक आदि दैविक जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, मोह, माया, अज्ञान, वासना को दूर करे।(७)

सुरकुलरंजन नित्यनिरंजन। भानुसुतावितनार। मम...८॥

सात्विक और देवी सम्पत्तिवाले जो सत्पुरुष साधु, संत और भक्तो के समूह को सदा आनंद देते है। जो सदैव नित्य है। अर्थात् तीनो काल में जिसकी स्थिति एक समान रहती है। उसमें कभी परिवर्तन नही होता है। जो माया के प्रभाव से रहित है। जो अंधकार रुपी रोक नही सकता है। अपने स्वरुप का सदैव ज्ञान रहता है। कभी भूलते नही है। जो यमना पुत्री यमुना महारानी के श्रेष्ठ पति है। अर्थात् यमुनाजी के हृदय से प्रेम करते है। जो यमुना जी में स्नान करते है जो सभी पापो को दूर करते है। ऐसे हमारे आराध्यदेव गोपीनाथधारी भगवान श्री स्वामिनारायण मेरे समस्त कष्टो, दुःखो, आध्यात्मिक, आदि भौतिक आदि दैविक जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, मोह, माया, अज्ञान, वासना को दूर करे।(८)

ब्रह्मपुरासन जनहितशासन। निष्कामानन्दनिधान। मम...९॥

अपने धाम अक्षरधाम जिसे ब्रह्मपुरधाम परमधाम चिदाकाशधाम कहते है। वे दिव्यतामें निवास करते है। वे अपने आश्रित भक्तो के हित के लिये। और भागवत धर्म में रखने के लिये इस पृथ्वी पर अवतार धारण किये है। ऐसी परमात्मा जो निष्कामानंद वर्णी कहते है मेरा आश्रय स्थान है। और जो कोई आश्रय करते है आनंद और आत्यंतिक मोक्ष के परम स्थान है। ऐसे मेरे इष्टदेव गोपीनाथ नाम धारण किये भगवान श्री स्वामिनारायण मेरे समस्त कष्टो, दुःखो, आध्यात्मिक, आदि भौतिक आदि दैविक जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, मोह, माया, अज्ञान, वासना को दूर करे।(९)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण	रसोई	
चुरमाकालड्डू	रू.१,८००/-	रू.१०,०००/-
मगशका लड्डू	रू.१,८००/-	रू.१०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रू.१,८००/-	रू.१०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रू.१,८००/-	रू.१०,०००/-
मोहनथाल	रू.१,८००/-	रू.१०,०००/-
मगशपूरी	रू.२,०००/-	
मालपूवा	रू.२,०००/-	रू.११,०००/-
खीरपूरी	रू.२,३००/-	रू.१२,०००/-
अडदिया का थाल	रू.२,५००/-	रू.१२,०००/-
साटा का थाल	रू.२,५००/-	रू.११,०००/-
शीखंड पुरी	रू.२,५००/-	रू.१७,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रू.२,५००/-	रू.१२,०००/-
बासुंदी पुरी	रू.२,७००/-	रू.१७,०००/-
खीर-मालपुवा	रू.२,७००/-	रू.१४,०००/-
गुलाब जामुन	रू.३,३००/-	रू.१२,०००/-
मैसुब	रू.३,५००/-	रू.१२,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रू.४,०००/-	रू.१७,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रू.२,५००/-	

स्थायी सुरक्षित थाल रु.५,००१/- तथा रु.१०,०००/-

ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५००/-

Mo. : 8238001666

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

भगवान श्री स्वामिनारायणने अपने संत एवं हरिभक्तो कही बार आज्ञा-उपासना-वहीवट इत्यादि विषयों के उपर बहुत बार उपदेश कीया है । अपने लिखाये हुए पत्र के उपर अपनी 'राजमुद्रा' भी लगाई हैं और इसलीए उस पत्र का महत्व का गुना बढ जाता । संप्रदाय के बंधारण के समान देश-विभाग लेख (सं. १८८३ मागसर सुद-१५ के दिन दादा खाचर के पिताजी एभल खाचर के दरबार में लिखवाया गया था) के उपर भी श्रीहरि की मुद्रा अंकित की गई हैं।

उसके बाद श्रीहरि के स्थान पर बिराजमान सभी धर्मवंशी आचार्योने इसी परम्परा में अनेक महत्वपूर्ण पत्र के उपर मुद्रा अंकित करते थे । आज के समय के मुताबिक अगर किसी व्यक्ति को कीसी खास हेतु कीसी भी व्यक्ति को अगर 'वार ओफ एटर्नी' दिया जाता तब उस 'लेटर ओफ ओथोरिटी' के उपर भी राज-मुद्रा अवश्य लगाई जाती थी और उस पत्र में समयावधिभी लीखी जाती थी और उस समय बितने के बाद वह व्यक्ति वह कार्य करने के लिए अधिकृत नहीं था ।

आज भी वह प्रथा बहुत महत्व की लगती है की एक निश्चित समयावधिके लीए ही कोई भी कार्य करने की अनुमति दी जाती है । एसा स्पष्ट विवरण श्रीहरि एवं पूर्वाचार्यो के पत्रो में कीया जाता था । एसे अनेक पत्र आज भी श्री स्वामिनारायण म्युजियम में अपने मूल स्वरुप में सुरक्षित हैं ।

श्रीहरि और पूर्व के सभी आचार्यश्री की मुद्रा धर्मवंशी आचार्य परम्परा में सुरक्षित रखी हुई हैं जो की प.पू. बड़े महाराजश्रीने कृपा करते हुए हरिभक्तो के दर्शन हेतु अपने म्युजियम में अर्पण की हैं । श्रीहरि और पूर्वाचार्यो की प्रसादीरुप मुद्रा से अंकीत पत्र की आज्ञा के पालन के लीए सभी संत और हरिभक्त हंमेशा उत्सुक और तत्पर रहते थे ।

यह सभी मुद्रा के दर्शन म्यजियम के होल नं. ११ में कर सकते हैं । आज भी बिना धर्मवंशी आचार्यकी मुद्रा कोई भी व्यक्ति कीसी भी कार्य करने के लिए अधिकृत नहीं हैं यह बात सभी संत और हरिभक्तो को ठीक रुप से समजाना हैं ।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची

(सितम्बर-२०१९)

दि. ०८-०९-२०१९ प.भ. पटेल विठ्ठलभाई शिवरामदास – रिद्रोल

(अक्टुबर-२०१९)

दि. १३-१०-२०१९ प.भ.अ.नि. जटाशंकर पोपटलाल शाह परिवार – ह. नवीनभाई और जगदीशभाई शाह – आंबावाडी

दि. २०-१०-२०१९ अ.नि. वर्षाबहन नवीनचंद्र पाठक – लंदन – ह. भावेनभाई पाठक

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि

(सितम्बर-२०१९)

दि. ०१-०९-२०१९ अ.नि. जयंतिलाल बुधालाल काछीया परिवार और अ.नि. कमलाबहन जयंतिभाई काछीया – लुणावाडा – ह. शंकरभाई और चन्द्रकान्तभाई

दि. ०८-०९-२०१९ श्री उदयनभाई महाराजा – विसनगर

दि. १०-०९-२०१९ श्री अरविंद गोविंद हिराणी – मानकुवा – कच्छ

दि. १४-०९-२०१९ (सुबह) धवलकुमार नरेन्द्रभाई पटेल – सायन्स सीटी
(दुपहर) जानकी भरतभाई जागाणी

दि. १५-०९-२०१९ श्री भरतभाई सोमदास पटेल – मारुसणा – निर्णयनगर

दि. १८-०९-२०१९ अ.नि. शा. स्वामी हरगोविंददासजी – ह. आनंद स्वामी और गुरुप्रसाद स्वामी।

दि. २९-०९-२०१९ चिराग ईश्वरभाई पटेल – गोता

(अक्टुबर-२०१९)

दि. १०-१०-२०१९ आशाबहन दिनेशकुमार पटेल (कैयल) – ह. चि. विश्वा – न्यु राणीप

दि. १८-१०-२०१९ लालजी प्रेमजी वेकरीया – सुरजपर–कच्छ

दि. २०-१०-२०१९ रमेशभाई डी. काछडीया (डीवाईन स्कूल – बापुनगर) – ह. दर्शिल और जतीन

दि. २२-१०-२०१९ दर्श निकुंजभाई चावडा के जन्मदिन के अवसर पर – ह. मनहरभाई चावडा (जीवराजपार्क)

दि. २५-१०-२०१९ लक्ष्मीपूजन प.पू. बड़े महाराज के वरद् हस्त से लक्ष्मी पूजन के यजमानश्री राजदीप भास्करभाई ब्रह्मभट्ट – नारणपुरा

दि. २६-१०-२०१९ श्री हनुमानदादा का समूह पूजन (काली चौदश के अवसर पर)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि

(सितम्बर-२०१९)

रु. ८८,०००/-	मुलजीभाई काचा टेलर्स परिवार – यु.के. धुलकोट
रु. ११,०००/-	डॉ. वसंत वालु साहब – अहमदाबाद
रु. ५,१००/-	जय पनारा – हैद्राबाद
रु. ५,१२१/-	अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीचंद भालजा साहब के ११७ वे जन्मदिन के अवसर पर – ह. प्रमोदभाई जाला (आरीवाला) – ह. डॉ. निकुंज (आरीवाला)
रु. ५,०००/-	अ.नि. जशवंतभाई दोशी की पुण्य तिथि के अवसर पर – ह. जयेशभाई दोशी – नारणपुरा
रु. ५,००१/-	अ.नि. दिवालीबहन और सवजीभाई नरशीभाई चौहाण – ह. चंदुभाई सवजीभाई चौहाण – धुलकोट – सुरत
रु. ५,००१/-	अ.नि. मोनिबहन और लवजीभाई नारणभाई वेगड – ह. मंजुलाबहन चंदुभाई – धुलकोट – सुरत
रु. ५,०००/-	मगनभाई धरमदास पटेल – डांगरवा
रु. ५,०००/-	काचा टेलर्स – लेस्टर (यु.के.)
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी – बोपल

(अक्टूबर-२०१९)

रु. ९,०००/-	मल्हार पियुषकुमार पटेल – आकरुन्द – धनसुरा में सरकारी नौकरी मीली इस अवसर पर
रु. ५,१००/-	किशनभाई भगवानभाई मेलाणीया – बीलीया
रु. ५,००१/-	कपिलाबहन अंबालाल पटेल – लांधणज
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी – बोपल

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

समस्त सत्संग को सूचन

લિખાવિંત સ્વામી શ્રી ૭ સહજાનંદજી મહારાજ જત અમદાવાદ મધ્યે શ્રી બ્રહ્માનંદ સ્વામી તથા વરતાલ મધ્યે આનંદ સ્વામી નારાયણ વાંચજો. બીજું હમણે અમે નવું પ્રકરણ ફેરવ્યું છે. જે મુક્તાનંદ સ્વામી, બ્રહ્માનંદ સ્વામી, નિત્યાનંદ સ્વામી, આનંદ સ્વામી, ગોપાલાનંદ સ્વામી, સ્વયંપ્રકાશાનંદ સ્વામી, પરમચૈત્યાનંદ સ્વામી, મહાનુભાવાનંદ સ્વામી, ભજનાનંદ સ્વામી તથા આત્માનંદ સ્વામી, ભગવદાનંદ સ્વામી, આદિક ભણવાવાલા મોટેરા સાધુ એ સર્વેને કોઈ જાયગાના મહંત કરવા નહિ. એવી રીત્યે આચાર્ય અયોધ્યાપ્રસાદજી તથા આચાર્ય રઘુવીરજી એ બેયની મરજી છે. અને આ માટે એ સાધુ લખ્યા તેની ચાકરીમાં એક એક સાધુને રહેવું ને તેથી વધારે સાધુ રાખવા હોય તો આચાર્યની આજ્ઞાએ કરીને રાખવા પણ પોતાને જાણે રાખવા નહિ. ને રહે તે વિમુખ છે. બીજું જાયગાના માહંત કર્યા છે તેની વિગત્ય જે, વરતાલની જાયગાના માહંત અક્ષરાનંદ સ્વામીને કર્યા છે તથા અમદાવાદની જાયગાના માહંત સર્વજ્ઞાનંદ સ્વામી ગવૈયાને કર્યા છે તથા જુનાગઢની જાયગાના માહંત ગુણાતીતાનંદ સ્વામીને કર્યા છે તથા ગઢડાની જાયગાના માહંત નિષ્કુલાનંદ સ્વામીને કર્યા છે તથા ધોલેરાની જાયગાના માહંત અદ્‌ભુતાનંદ સ્વામીને કર્યા છે તથા ભુજનગરની જાયગાના માહંત વૈષ્ણવાનંદ સ્વામી બ્રાહ્મણીયાને કર્યા છે. એવી રીતે આચાર્યની મરજી લેઈને સર્વે જાયગાના માહંત જડભરતને કર્યા છે. બીજું હવેથી સાધુની મંડલી બાંધીને જ્યાં જ્યાં મુકશે તે આચાર્ય પોતે મુકશે એમ પ્રકરણ ફેરવ્યું છે. બીજું આવી રીત્યે આચાર્યની આજ્ઞાને જે નહિ માને તે વચનદ્રોહિ ગુરુદ્રોહિ છે. બીજું આ કાગલ વંચાવવો તે સત્સંગી સર્વેને સાંભલતે વાંચવો ને સર્વે સત્સંગી હરિભક્તને તથા સર્વે પરમહંસને આ પ્રકરણની વાર્તા જાહેર કરવી. સંવત ૧૮૮૫ ના મા. સુદી-૯.

अत: समस्त सत्संग को यह ज्ञात हो की, प्रियाबा एवं दक्षाबा नाम के बहनो को सांख्ययोगी दीक्षा प्रदान करके उनको श्री स्वामिनारायण मंदिर, वावोल (जी. गांधीनगर) में सेवा-पूजा करने के लीए भेजे थे। लेकिन दोनो कुंडाल (कडी) में नया मंदिर बनने के बाद किसी की भी अनुमति न लेते हुए वहाँ चले गये है और उनका व्यवहार और वर्तन भी संप्रदाय से अनुरुप नहीं है और उचीत नही है। अत: श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर संस्था से अब उनका कोई लेना-देना नहीं है और अब इस विषय में कुंडाल (कडी) के समस्त महिलाए जवाबदार रहेंगी।

विशेषत: सभी मंदिरो के अग्रेसर व्यक्तिओं को यह ज्ञात हो की महाराज की आज्ञा के अनुसार जहाँ तक कोई भी गाँव में आज्ञा के बिना आये और आज्ञापत्र बिना कोई भी त्यागी (बहन) को नही रखना।

- आज्ञा से
पर्सनल सेक्रेटरी
प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર દ્વારા ઋષિકેશમાં શ્રીમદ્ ભાગવત પારાયણ

બાળ મંડળ - સુવર્ણ જયંતી મહોત્સવ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર જયપુર

દિયોદર - બનાસકાંઠા સમસ્ત સત્સંગ દ્વારા હરિદ્વારમાં શ્રીમદ્ ભાગવત પારાયણ

અ.નિ.વર્ષાબેન નવીનચંદ્ર પાઠક (વુલવીચ- લંડન)ના સ્મર્ણાર્થે કાલુપુર મંદિરમાં ત્રિદિનાત્મક વચનામૃત પારાયણની પુર્ણાહુતિની આરતી ઉતારતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી.

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

दिवाली का आनंद

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

दिवाली तो दिवाली है। जहाँ देखे वहाँ पर प्रकाश सबको अच्छा लगता है। सत्संग के आनंदवाली दीपक की दिवाली। इसका नाम आते ही बालक नाचने लगते है। और युवक मचलने लगते है। बडे लोग विचार करने लगते है।

ऐसी बात हुई । आज दिवाली का दिन अर्थात् युवक मचलने लगे थे । अपने बंदूक को सजा लिये थे । गाँव के किनारे तालाब, तालाब के किनारे अपनी बंदूक साथ युवक पहुंच गये । पूरा गाँव वहाँ इकठ्ठा हुआ था । इतना ही नही सोने में सुगंधजैसे स्वामिनारायण भगवान और साथ में पाँच सौ संत और अगल-बगल गाँव के हजारो भक्त भी।

मित्रो ! आप को अभी तक सूचना हुई किस गाँव की बात है ? बडी आदरज गाँव की बात है । यहाँ की परम्परानुसार दिवांली के दिन एक ऐसा खेल खेला जाता है। कि बात मत करें । मिट्टी के लोटिया उपर दीपक रखा जाता है । दीपक में बत्ती लगाकर मिट्टी के पात्र पानी में तैरता छोड देते है। तैरते तैरते तालाब के बीच जाता है। तब खांट परिवार के सभी युवक क्रमशः बंदूक से निशाना लेते है। मात्र सुलगती ज्वाला उडजाती है। इस प्रकार सच्चे निशान बाज का परीक्षण होता है। सच्चे निशानबाज की पहचान हो जाती है । उसका सन्मान ताली की ध्वनि से किया जाता है। यह अनोखा खेल है।

आज तालाब के पास स्वामिनारायण भगावन के सानिध्य में रहकर खेल प्रारम्भ किये थे । शाय का समय था अंधेरा होने पर एक के बाद एक युवक आये निशाना नही लगा पाये थे । स्वामिनारायण भगवान कहते है, रतुखांटजी ऐसा क्यो ऐसा क्यो हो रहा है । क्यो कोई निशाना नही लगा पा रहा है ? तब रतुखांट बोलते है । महाराज ! यह कायम ऐसा होता है। पच्चीस-पच्चास पात्र टूटने पर कोई एक निशाना लगा पाता है।

तब स्वामिनारायण भगवान कहते है कि रतुजी । पहले बार जो निशान ले ऐसा निशानेबाज हमारे पास है। आप कहे तो उसे खडा करें। हे ! महाराज ! क्या बात करते है ? ऐसा कौन, निशाने बाज आप के पास है ? और महाराज पार्षदवर्य भगुजी को आज्ञा दिये । भगुजी खडे हुए। महाराज को प्रणाम किये। हाथ में बंदूक लिये। मिट्टी के वर्तन पर दीपक रखा गया । उसमें दीप जला कर तालाब के पानी पर तैरा दिया गया। बर्तन धीरे-धीरे आगे बढने लगा। चारो तरफ अंधेरा मात्र केवल ज्योति दिखायी देती थी । और भगुजी स्वामिनारायण भगवान का नाम लेकर निशाना लिये । एकबार में ही दिपक की ज्योति समाप्त हो गई। प्रकाश किया गया। देखा गया तो मिट्टी का बर्तन तैर रहा था। केवल बाती उड गई थी।

तालियाएं बजने लगी । वाह-वाह होने लगा । स्वामिनारायण भगवान की जय हो स्वामिनारायण भगवान की जय हो....... रतुजी के परिवार को आश्चर्य हुआ कि ऐसा निशानेबाज सब कुछ त्यागकर स्वामिनारायण भगवान के साथ धुमते है। सबको लगा की भगवान के साथ रहने वाले मात्रमाला ही फेरते होगे।

स्वामिनारायण भगवान कहते है। भक्तो ! हमारे साथ सभी प्रकार के सैनिक है। शस्त्र से लडना हो तो ये शूरवीर, बहादुर पार्षद है। और शास्त्र से लडना हो तो हमारे ये संत है।

बाद में दूसरे दिन इस आदरज गाँव में स्वामिनारायण भगवान ने बडा अन्नकूट उत्सव किये। जो सम्प्रदाय के इतिहास में अमर हो गया। रतु खांट की माँ सुजानबा तथा उनकी बहन हवनबा तथा ब्राह्मण भक्त संतोने प्रेम से अन्नकूट बनाये। अहमदाबाद की गंगाबाई, रेवाबाई, इत्यादि बहनो ने विविधपकवान बनाये थे।

भक्तराज रतुखांट के घर के चौक में सुन्दर मंडप बनाया गया । वहाँ गद्दी पर स्वामिनारायण भगवान को बैठाया गया। तथा सभी तरह के पकवान प्रेमभाव श्रद्धा से भगवान को अर्पण किया गया। प्रभु भाव से भोग लगाये बाद में संत, पार्षद तथा आप पास के गाँव से आये

हरिभक्त सभी ने प्रसाद खाया । रतुखांट ने भगवान की पूजा किये । जय जयकार होने लगी ।

मित्रो, आनंद आया न ये तो दिवाली अपनी अच्छी से मनाये । याद रखे, दिवाली जैसा आनंद जीवन में सदैव रहे तो भगवान को सदैव पास रखना । यदि इतना करेगे तो आप का कोई इद्देश्य बेकार नही होगा । कोई शुभ संकल्प अपूर्ण नही रहेगा ।

बालवाटिका के सभी पाठको को मित्रो-भक्तो को नूतन वर्षाभिनंदन के साथ जय स्वामिनारायण ।

•

सजग रहे

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मित्रो ! इसबार तो पूरे गुजरात में मेघराजा की कृपा हुई है । पानी सुर्वत्र व्याप्त है । छोटी-छोटी नदियाँ क्या बडी बडी नदियाँ पूर्ण वेग से बह रही है । जहाँ देखे वहाँ पर जल ही जल इस ऋतुकी बात आने पर एक घटना याद आ जाती है ।

एक बार की बात है कि प्रलयकारी वर्षा हुई थी । तालाब-कुआँ भर गये थे । उस समय तो गटर व्यवस्था नही थी । इस लिये इकट्ठे जल में मच्छर अधिक हो गये थे । मच्छर तो छोटे-बडे सभी को काटते है । पशुओ को भी मच्छर काटते है ।

ऐसे में एक ऊँट को भी समस्या पैदा हो गयी । उस ऊँट का कोई मालिक नही था । उस पशुको लावारिसपशु कहते है । जंगल में टहलते है । मन अनुसार इधर-उधर खाते है । ऐसे वर्षा ऋतु में उसकी नाक सड़ गयी थी । सडने वाली जगह पर मच्छर अधिक काटने लगे थे । मच्छरो को काटने से उसको दर्द होता था । दर्द के कारण ईधर-उधर दौडता था । उसकी देखभाल कौन करे । क्योकि वह तो लावारिस ऊँट था । इस तरह दौडते-दौडते एक गाँव में आया ।

जिस किसी घर में प्रवेश करना चाहता था । लोग धक्का देकर भगा देते थे । उसकी नजर एक छोटी झोपडी के उपर गयी । उस झोपडी में एक वृद्ध माँ रहती थी । उनके पास कोई संतान नही था । ऊँटने सोचा इस घर में कोई परेशान करने वाला नही है । वृद्ध माँ क्या कर सकती है ? ऐसा सोचकर ऊँट अपनी लम्बी गरदन को माँ के घर में डाल दिया । ऊँट को अंदर आते देख वृद्ध माँ लकडी लेकर आई । ऊँट कहने लगा कि अरे । मुझे मत मारिये । हमारी बात तो सुनिये । मैं गरीब जानवर हूँ । आप को कष्ट नही दूँगा । बाहर अधिक वर्षा हो रही है । मुझे बाहर अधिक मच्छर काट रहे है । आप अपने झोपडी में मेरा सिर केवल रखने दे । इतनी हमारे उपर दया करें ?

ऊँट की लाचारी भरी बात सुनकर वृद्ध माँ को दया आ गयी थी । अच्छा केवल सिर ही तो रखेगा । ऊँठ सिर को अंदर रख लिया । कुछ समय के बाद पूरा गर्दन अंदर कर दिया । वृद्ध माँ गृह कार्य में लग गई । यह देखकर वृद्धा बोली अपने कर्मो का फल पायेगा । अब ऊँट को विश्वास हो गया । यहाँ पर कोई विरोधनही करेगा । अब अपनी बात चलेगी । उसने अगला दो पैर अंदर किया । वृद्ध काम करती रही । पाँच-दस मिनट के अंदर पूरा ऊँट अंदर चला गया । कच्ची झोपडी पूरी गिर गई । पानी का प्रवाह झोपडी के अंदर रखे सभी सामान को बहा दिया । ऊँट अपने स्वार्थ के कारण सहारा देने वाले का घर मैदान में बदल दिया ।

अब वृद्ध मां का सहारा नही रहा । ऊँट की मदद को लेकर अपने को कोसने लगी । लेकिन अब क्यो ?

मित्रो ! ये बात अति सामान्य है । यदि विचार करे तो बडी बात है । कई बार प्रेम वस या अज्ञानता से दुष्ट मानव के प्रति रखी हुई दया का परिणाम अच्छा नही होता है । कई बार दुष्ट की सहायता से अपना अधिक खोना पडता है । छोटे उम्र में यह बात समझ में नही आयेगी । लेकिन एक बात हमेशा याद रखो कि सदैव सजग अवस्था में रहो । अनिष्ट रोक सके इतनी अपनी क्षमता होनी चाहिए । इस लिये सदैव सजग रहे । ऊँट का कोई मालिक नही था । लेकिन जिसका मालिक होता है वह ध्यान देता है । हमारे ईष्टदेव श्रीहरि भी गढ़डा प्रथम प्रकरण के बत्तीस वचनामृत में प्रश्न पूछे है । ''जैसे मालिक वाले पशु सीमा में रहकर अपके मालिक के पास आ जाता है ।'' जो लावारिस पशु होते है वे खेत में खाकर वहीँ पर रह जाते है । लोक मार मारकर खेतो से भगा देते है ।

हरिभक्त के रुप में हम पूरे दिन कार्य करके शायं मंदिर में जाकर ईष्टदेव की भजन-भक्ति उपासना करे । यदि गांव में मंदिर नही हो तो घर पर बैठकर भजन-भक्ति करना चाहिए । तो समझना चाहिए कि हमारे मालिक है । बालवाटिका के सभी वाचक मित्रो को नये वर्षाभिनंदन के साथ जय स्वामिनारायण ।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "समर्पण की भावना से समर्पित कर दे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

महाभारत के युद्ध के बाद भीष्म पितामह जब बाणशैया के उपर उत्तरायण के सूर्य की देख रहे थे। भीष्मपितामह ने कष्ट से कहे कि, ''मेरा संशय दूर करे'' तो भगवानने पूछा कि ''आप का संशय क्या है ?'' तब भीष्म पितामह बोले की ''इस महाभारत के युद्ध में जो हुआ वह उचित उहा है जो हुआ योग्य हुआ ? तब भगवान बोले ''किसकी तरफ से'' तो भीष्मपितामह बोले ''जो पाण्डवो ने किया जो उचित था।'' तब भगवान बोले ''जो होना चाहिए था वह ही हुआ ''तब भीष्मपितामह बोले ''आप भगवान होकर क्यो छल-कपट किये, क्या योग्य था ?'' आचार्य द्रोण का वधहुआ। दुशासन की छाती फाडी गई, दुर्योधन की जाँधतोडी गई। कर्ण का वधहुआ। तो भगवान बोले ''जो होना चाहिए वैसा ही हुआ।'' तो भीष्म पितामह बोले ''आप त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम थे अब आप ''छल'' किये। तब भगवान बोले कि ''इतिहास से सीख'' ले। लेकिन 'निर्णय' लेना हो तो वर्मतान परिस्थिति प्रमाण से लेना चाहिए। अब द्वापर युग की परिस्थिति अलग है। द्वापर युग और त्रेतायुग में बहुत अंतर है। उस समय रावण जैसा खलनायक था। लेकिन वह शिव भक्त थे। प्रकांड पंडित और त्रिकाल ज्ञाता थे। और उसके कुल में विभीषण जैसा राम भक्त पैदा हुए थे। इस समय जरासंघ, कंस, दुर्योधन, जैसे घोर पापी का विनाश करने के लिये अलग-अलग विधिथी। पाप का अंतलाने के लिये पाप पर विजय प्राप्त करने के लिये समय के हिसाब से युक्ति अपनाना चाहिए। तब भीष्म पितामह कि ''आप का जो व्यवहार आने वाली पीढीको गलत उदाहरण देगी।''

तो भगवान श्री कृष्ण बोले कि ''कलियुग की परिस्थिति अब से खराब और भयानक होगी। धर्म की रक्षा के लिये कटोर बनना पडेगा।'' जब क्रूर और अनैतिक मनुष्य सिद्धान्त के उपर आक्रमण करते है। तब नैतिकता हीन हो जाती है। आप के न रोकने से आत्मघाती हो जाता है। आप को ऐसा लगता होगा कि ऐसा न कहे लेकिन कभी कहना पडता है। निर्णय न लेने पर स्वयं का विनाश करते है। धर्म पर आक्रमण होने पर विजय के लिये युद्ध करना पड़ता है। सभी बात प्रभु पर छोडना मूर्खता कहा जायेगा। थाली का भोजन स्वयं खाना पडता है। कुछ कार्य स्वयं करना पडता है। सभी कार्य भगवान के उपर छोडना मूर्खता पूर्ण बात है। श्रीकृष्ण भगवान केवल साथ रहे थै। पाँडवो के विजय हेतु लडाई तो स्वयं करना पडता है। भगवान लडे नही थे। अर्जुन भगवान की स्थिति में भगवान के पूर्ण शरणागत होकर आज्ञानुसार नीति पर चलकर युद्ध किये थे। इस लिये अर्जुन इतना बड़ा युद्ध लडे थे। कर्मबंधन से मुक्त रहे। और भगवान अनीति के उपर चले लेकिन अपने स्वार्थ के लिये नही किये थे।

भगवान पांडवो की सम्पूर्ण शरणागति देखकर अर्जुन बोले में उपस्थित रहूँगा। भगवान की आज्ञा लिये। भगवान के पास से ज्ञान लेने के बाद अर्जुन महाभारत का युद्ध लडे थे। पूर्ण शरणागति की विशेष विधिहोती है। केवल कंठी पहन लेने से शरणागति नहीं होती है। शरणागति की पूरी प्रक्रिया अपनाना पडता है। पूर्ण शरणागति का ६ स्तर है। उस में से चार प्रयोग में ले नही चलेगा। सभी वस्तुओ की अमल हो तो सम्पूर्ण शरणागत कहा जाता है।

(१) भगवान की मर्जी में अपनी मर्जी मान लेना अर्थात् अपने मालिक की आज्ञा में रहना।

(२) विपरीत दिशा में नही जाना : जीवन में कई प्रश्न आते है। तब श्रद्धा घट जाती है। कुछ समय के लिये

कुछ ऐसा हो जाता है कि ऐसा नही होना चाहिए। ऐसे समय प्रार्थना शक्ति के लिये करना चाहिए। भगवान कृपा करे क्योकि सहनशीलता अच्छी बात है।

(३) स्थायी तौर पर विश्वास रखे कि महाराज पग-पग पर रक्षा करेगे, मेरी सहायता कर रहे है। ये सत्य है। लेकिन यह याद रखे और अंतर से विश्वास रखे। किस तरह से आप की सहाता करते है। वे उपर से आकर अपने पास तो नही रहते है। लेकिन समयानुसार ज्ञान कराते रहते है। हमें सूचना दे देते है। महाराज ने प्राणीयो को ऐसा गुण दिये है कि स्वयं का जीवन निर्वाह करने में समर्थ बन सके। हम देखते है कि कुछ जगह पर एक भी चींटी नही होती है। लेकिन मिठाई रख देने पर कही से भी चिटियाँ आ जाती है। उनको ज्ञात हो जाता है और अपना पेट भर लेती है।

(४) जो कृपा भगवान कर रहे है उसका आभार माना चाहिए। कृतज्ञता का भाव रखे, कृतघ्नता नहीं दिखाना चाहिए। कभी-कभार संतान अपने पिता को ऐसा जवाब देते है कि ऐसा नही होना चाहिए। हमारे लिये जो किये है उसका आभार मानना चाहिए। हम अच्छी सब्जी बनाते है या रस बनाते है। जो प्रभु ने दिया है। इतना आभार माने जो प्रभु ने दिया हे अच्छा है। हमारी कोई शक्ति नही है। आज का वैज्ञानिक चाँद तक पहुँच गया है। उसका विरोधनही। लेकिन चाँद नहीं बना सकता है। पानी, मिट्टी ये सब नही बनाये जा सकते है। वृक्ष और पत्ते दोनो है। माना एक आम है। उसमें से दस आम के पेड बना सकते है। यदि प्रकृत्ति में आम का पेड ही न हो तो क्या कर सकते है? 'परमात्मा का सृष्टि निर्माण अद्भूत है। चलने के लिये धरती दिये है। पीने के लिये पानी दिये है। श्वास लेने के लिये हवा दिये है। तो जीवन जीते हे।

(५) अहंकार की भावना कभी न रखे। खाली हाथ आये है और खाली हाथ जाना है। इस पृथ्वी पर जो कुछ मिला है अच्छे रुप से जिये। साधन का सदुपयोग करे। परमात्मा का आभार माने। अहंकार अति खराब है। अब अंत की अत्याधिक महत्वपूर्ण विषय है।

(६) सर्मपण की भावना को भी समर्पित कर दे। हमें शरणागति स्वीकारने के बाद १००% सर्मपण की भावना रखते है। कभी भी करने का भाव न रखे। ये भी एक प्रकार का अहंकार है। शायद अपने वाणी, व्यवहार, स्वभाव से दिखाई नही देता केवल भगवान देख सकते है। इसके लिये सजग रहना चाहिए। सम्पूर्ण शरणागति भी कृपा से मिलती है। भगवान की प्रार्थना करना कि उनके कृपा से यहाँ तक आये है। आप का ऋणी हूँ। इसका धन्यवाद देना चाहिए। सम्पूर्ण समर्पण की भावना से भगवान की कृपा भंडार सदैव खुला रहेगा।

•

"स्वामिनारायण संप्रदाय"

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

कलियुग का लगभग ५००० वर्ष बीत चुका है। उस समय अति अधर्म व्याप्त था। उस समय सर्वावतारी परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान इस पृथ्वी के उपर अधर्म और असुरो का नाश करने के लिये प्रगट हुए थे। और श्री स्वामिनारायण सप्रदाय की स्थापना किये। यह सम्प्रदाय अविचल बना रहे प्रगतिशील बना रहे। अपने आश्रितो का शीध्र कल्याण हो ऐसी ईच्छा से श्रीहरिने सम्प्रदाय की स्थापना किये है। सम्प्रदाय के आधार स्तम्भ का मजबूत नींव रखे। (१) मेरा मंदिर बनाकर नरनारायणदेव, लक्ष्मीनारायणदेव, राधाकृष्ण देव आदि देवो की स्थापना किये। (२) इस सम्प्रदाय का ज्ञान और उपासना की पुष्टि करने वाला सत्यशास्त्र जैसे कि सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, वचनामृत, शिक्षापत्री, भक्तचिंतामणी जैसे सच्चे शास्त्रो की रचना किये है। (३) सम्प्रदाय के उत्तर और दक्षिण दो विभाग किये थे। धर्म की रक्षा करने धर्मवंशी दो आचार्यो की स्थापना किये है। (४) इन तीन स्तम्भो की पुष्टि करने वाले संत बनाये। इन चार स्तम्भो से सम्प्रदाय की प्रगति के लिये अग्रसर है।

स्वामिनारायण सम्प्रदाय अर्थात् १०० टच का सोना है। इस में कुछ देखना ही नही है। इस सम्प्रदाय में मोक्ष भी सरल और सीधा है। ऐसा सम्प्रदाय अभी तक नही हुआ है। क्योकि इस सम्प्रदाय के स्थापक श्री स्वामिनारायण भगवान है। अनेक जन्म के पुण्य उदय होने के कारण इस सम्प्रदाय के आश्रित बनते है। और मोक्ष भी मिल सकता है। जेरामदास कहते है कि पूर्वका पूण्य प्रगट

होने पर स्वामिनारायण से मिले है। अनेक जन्म का पुण्य उदय होने पर इस सम्प्रदाय की प्राप्ति होती है।

(२) इस सम्प्रदाय में धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति की शुद्धता है। जीव ईश्वर, माया, ब्रह्म, परमब्रह्म स्वरुप को समझाये है। सीधे सरल भाषा में जिससे उलझ न सके ।

(३) इस सम्प्रदाय में जो कोई भी आये उसका मोक्ष होता है। पापी पतित जीवो भी मोक्ष प्राप्त करते है। जैसे वडताल का प्रख्यात लुटेरे जोबन पगी, में गणी गाँव के अभेसिंहराजा, रुडियो रखडू, मुंजासोरु, जेतलपुर की गणिका पापी पतित को मोक्ष प्रदान किये।

(४) बंधकीधा सर्वे बारणा रे, वहेती मूकी अभरवाट रे..... पुरुषोत्तम प्रगटी रे, नोती दीठी नोती साभली रे, प्रगटावी रीत पुनित रे.... पुरुषोत्तम प्रगटी रे'' स्वामिनारायण के आश्रित हो गये। अर्थात् मोक्ष हो गया। अंतकाल प्रभु लेने आये। क्योकि उन्हे पदवी मिली है कि हमारे लोगो को अंतकाल में अवश्य आते है। वचनामृत में कहा गया है कि धर्मकुल के आश्रित ऐसे भगवान के भक्त को विमान, रथ, गरुड उपर बैठकर लेने आते है। अपने धाम में ले जाते है।

कल्याण की विधिन्यारी है। अक्षरधाम में जाना हो तो नियम, निश्चय, पक्ष, आज्ञा, उपासना, शुद्ध रखेगे तो पक्के सत्संगी होगे । तब अक्षरधाम में जा सकेगे । इस मजबूती से यह सम्प्रदाय विकास किया है। स्वामिनारायण भगवान प्रगतिशील कार्य करते अन्तर्धान होने से १५ दिन पहले गढपुर में परमहंसो, गृहस्थ और स्त्री समाज को इकठ्ठा करके आदेशा दिय ''हे भक्तो आपकी हित की बात है। इस सम्प्रदाय में सभी प्रेम से रहना। मनभेद मत रखना। मिलकर रहे। सभी आत्मबुद्धि रखे। आचार्य, संत, गृहस्थ का आपस में एक मजबूत कडी है। कडी के अलग होने से एकता समाप्त हो जाती है। सत्संग में संगठन रखे। एक दूसरे से अलग होने का विचार न रखे। प्रेम और एकता से सम्प्रदाय में वृद्धि होगी। जिस प्रकार से टिटहरी के बच्चे को समुद्र ले गया। तो सभी टिटहरी चोच में रेती, कंकड, लाकर समुद्र में डालने लगे। पक्षियो में गरुण राजा वडे पत्थर पहाड डालने लगे। इस कारण से समुद्र टिटहरी के बच्चे को वापस कर दिया। एकता और प्रेम से आप का कार्य अवश्य पूर्ण होगा।

•

कभी किसी पर ईर्ष्या न करे

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, कडी)

एक चन्द्रनगर नाम का बडा राज्य था। इस राजा का राजा चन्द्रभानुसिंह थे। वे खूब दयालु और न्यायी थे। लेकिन उन्हें क्रोधजल्दी से आता था। इस नगर में छोटा बाजार था। उसमें दरजी की दुकान उसके सामने मोची की दुकान थी। मोची भगवान का अनन्य भक्त था। प्रातः उठकर भगवान की पूजा करके दुकान पर आ जाता था। पूरे दिन भजन गाता और जूते बनाता था। दूकान पर जो कोई आये उससे भगवान की चर्चा करता था। दरजी को उस पर ईर्ष्या आती थी। वह उसे हमेशा नीचा दिखाने का प्रयास करता था। लेकिन मोची भोला था। कभी वह इस बात पर ध्यान नही देता था।

एकबार राजा का जन्म दिन आया। इस दिन नगर में दीपक जलाया गया। रास्ता को साफ किया गया। प्रत्येक वर्ष जन्म दिन पर राजा की सवारी निकलती थी। इस वर्ष भी सवारी निकली थी। दरजी को अच्छा अवसर मिला मोची को नीचा दिखाने के लिये वह फटा जूता रास्ते पर रख दिया। मोची देखकर भी कुछ नही कहा। राजा की सवारी आ गई। राजा बीच रास्ते में फटा जूता देखकर राजा क्रोधित हो गये। उन्हे अपना अपमान लगा। राजा तेजी से बोले यह किसका जूता है। दरजी बोला यह तो मोची का है। राजा के आदेश से मोची को कारावास में रख दिया गया। वह देखकर दरजी अति प्रसन्न हुआ।

दूसरे दिन दरजी को राजा ने सुंदर कपडा दिया और बोला इस सुंदर कपडे से चार दिन में अच्छा कपडा बना कर दो। दरजी मन से कार्य किया चार दिन में राजा का कपडा तैयार कर दिया। वह सोचने लगा कल कपडा देने पर राजा हमें बडा इनाम देगे। यह विचार कर वह सो गया। विचार अनुसार सब कुछ नही होता है। रात में दो-चार चूहे आ गये। राजा का कपडा फाड दिये। प्रातः

उठकर दरजी कपडे की दशा देखा तो उसकी दशा खराब हो गई। उसे लगा राजा हमें अब फाँसी दे देगे। यह सोचकर अपना धन लेकर दूसरे राज्य में चला गया। मोची को कष्ट होने के बाद भी दरजी के प्रति स्नेह बना रहा।

इस तरफ राजा दरजी को राहदेख रहे थे। राजा सैनिक से बोले कि दरजी को पकडकर यहाँ पर ले आओ। सिपाही दरजी के घर पर गये। उसका घर तो बंद था। सिपाही ताला तोडकर अंदर गये। सारा सामान लेकर राजा के पास आये। राजा सामान को देखे उसमें फटा हुआ जूता भी था। वह जान गये कि यह जूता हमारे जन्मदिन पर दरजी ने रखा था। बेकार में मोची को दण्ड मिला। राजाने आदेश दिया कही से भी दरजी को खोज कर लाओ। सिपाई गाँव-गाँव जाकर खोजने लगे। एक गाँव में मिल गया। उसे पकडकर राजा के पास लाया गया। राजाने पूछा सडक पर जूता तुमने रखा था। दरजी गुनाह स्वीकार कर लिया। राजाने उसे सजा दिया। मोची से माफी माँगे और इनाम सन्मान के साथ उसे घर भेज दिये। भगवान जो करते है। हमारे लिये अच्छा ही करते है। भगवानने उसे बचा लिये।

•

मोक्ष दाता

– ठक्कर वीणाबेन नरेन्द्रभाई (बोपल)

संसार के सभी लोग अपने मोक्ष हेतु उपाय करते है। चार पुरुषार्थ, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष शुकदेवजी राजा परीक्षित को मोक्ष हेतु भागवत की वारह स्कंधकी कृष्णकथा सुनाते है। भागवत के आठवे स्कंधमें गजेन्द्र के मोक्ष की कथा है।

मोक्ष दाता भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वहस्ते लिखित शिक्षापत्री श्लोक १२१ में बताते है कि.... उस धाम को ब्रह्म रुप करके श्रीकृष्ण की सेवा करना यह मुक्ति है। ऐसा बताते है।

मोक्ष के लिये सतयुग में दान, त्रेता में यज्ञ, द्वापर में सेवा, कलियुग में नाम स्मरण करना अच्छा है।

कोई भी मुमुक्षु भगवान का भाव से दर्शन करे। कथा-भजन करे . सेवा सत्संग करे। भाव से ठाकुरजी को समर्पण करे तो सहज मोक्ष प्राप्त करेगा।

महाराज लोया गाँव में शाकोत्सव मनाये थे। गाँव-गाँव संत हरिभक्त आये थे। कोई हरिभक्त पूजा करे। कोई वस्त्र-अलंकार लाये थे। कोई रुपये से भरा थाल रखकर महाराज को खुश करते थे। वहाँ पर एक गरीब ब्राह्मण महाराज के पास आये। उन्हे भी महाराज को खुश करना था। वे अपने फटी हुई पगडी में एक रुपया रखे थे। महाराज को भेट में प्रदान किये। श्रीहरि उस भूदेव से बोले ''यह एक रुपया मेरे चरण में रखे है। इसकी जगह पर आप अपनी फटी पगडी की जगह नयी पगडी खरीद ले? गरीब ब्राह्मणने कहा महाराज! मेरे हृदय में भाव था कि कुछ आप को अर्पित करु। तो इस एक रुपया को बचा कर रखा था। फटी पगडी तो चलेगी। लेकीन आज हमारे अतंर की इच्छा पूर्ण हुई है। श्रीहरिने कहा ''भूदेव! आप तो सबदान किये है।'' महाराज बोले मुक्तानंद स्वामी! इस भूदेव के मोक्षहेतु कुछ शेष नही है। इन्होने सब कुछ हमें समर्पित कर दिये है।

एक रुपया दान से भावपूर्वक समर्पण से मोक्ष का वरदान मिला। इस प्रकार कृपालु श्रीहरि के कृपा का पार नही है।

महाराज प्रगट होकर मोक्ष के मार्ग को सहज बना दिये।

''जेने जोईये ते आळो मोक्ष मागवा रे लोल,
आज धर्मवंसी ने द्वार ....''

महाराजने गढडा मध्य-४५ वे वचनामृत में कहे है कि भगवान और भगवान के भक्त खुश हो ऐसा कार्य करे। तो यह शरीर परमपद जैसा सुख पाते है। यदि नरक में जाने का योग है तो उस कर्म का नाश हो जाता है। जो लोग समझदार है वे लोग भगवान तथा भगवान के भक्त को खुश करने का कार्य करते है। इतना खुशी की बात बताये है।

हमारी भावना जब शुद्ध होगी तो भगवान अवश्य कृपा करेगे। मोक्ष जो मानव जन्म का प्रथम सार्थक उद्देश्य होता है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर दिपोत्सवी उत्सव

सर्वावतारी श्रीहरिने शुरु की हुई समैया और उत्सव की परम्परा आज भी संप्रदायमें सभी जगह देखने को मिलती है। परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पावन सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजीकी प्रेरणा से दिपोत्सवी उत्सव बड़े उत्साह से मनाये गये।

काली चौदश दि. २६-१०-२०१९ शाम ६-३० बजे धर्मकुल के कुलदेवता श्री हनुमानजी महाराज का पूजन-अर्चन और आरती प.पू. लालजी महाराजश्रीके वरद् हस्त से विधिवत रुप से संपन्न हुए। पूजारी पार्षद बाबु भगत और पार्षद महादेव भगतने सुंदर व्यवस्था की थी। आखिर में श्री हनुमानजी महाराज को सुंदर अन्नकूट अर्पण कीया गया था। शहर के बहुत सारे हरिभक्तोने इसके दर्शन किये थे।

दिपावली-समूह चोपडा पूजन दि. २७-१०-२०१९ रविवार शाम को ७-०० बजे प्रसादी के सभा मंडप में समूह चोपडा पूजन-शारदा पूजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से वैदिक विधिसे हुआ। जीस में ८०० से भी ज्यादा व्यापारीओंने अपने व्यवसाय और उद्योग के चोपडा का देव के सन्मुख और प.पू. महाराजश्री के वरद् हस्त से वेदोक्त विधिसे पूजन किया। यह विधिमंदिर के विद्वान गौर श्री कमलेशभाई ने संपन्न कराई थी।

नूतनवर्ष - अन्नकूटोत्सव दि. २८-१०-२०१९ नूतन वर्ष सं. २०७६ के दिन प्रात: ५-०० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री ने परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती उतारी थी। हजारोकी संख्या में भक्तजनोने मंगला आरती के दर्शन कीये और प.पू. बडे महाराज के चरण स्पर्श और दर्शन करके कृतार्थ हुए। सुबह ६-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकोरजी की शृंगार आरती उतारी थी। शहर के सभी हरिभक्त अपने परिवार के साथ दर्शन के लीए आये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ठाकोरजी के दर्शन करने के बाद सभा में पीठस्थान पर बिराजमान होकर हरिभक्तो को अलौकिक दर्शन दिये थे।

सुबह १०-३० बजे परमकृपालु श्री नरनारायणदेव इत्यादी देव की छप्पन भोग अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हस्त से संपन्न हुई थी। श्रीहरि के हजारो आश्रितने अन्नकूट आरती के दर्शन करके धन्य हुए थे।

अन्नकूट प्रसाद का वितरण श्री नरनारायणदेव देश के सभी गाँवो में संत और पार्षद मंडलने भाई-दूज से लेकर चौथ तक सुचारु रुप से संपन्न कीया था।

समग्र दिपोत्सवी उत्सव में स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से स.गु. हचिरण स्वामी (कलोल), स.गु. जे.पी. स्वामी, स.गु. कोठारी जे.के. स्वामी, स.गु. नटु स्वामी (जुनागढ), भंडारी योगी स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादी संत-पार्षद मंडल और अनेक हरिभक्तोने बहुत सुंदर सेवा की थी। विशेषरुप से अन्नकूट की सेवा में पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से बहुत सारे हरिभक्तो ने घी, तेल, चीनी, गुड, सुकामेवा इत्यादि की सेवा की थी।
(कोठारी शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी का वरघोडा

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने उत्सव और समैया की जो प्रणाली शुरु किये थे। उसको आज भी सुंदर रुप से मनाया जाता है। भाद्रपक्ष सुद-११ जलझीलणी एकादशी को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में विघ्नहर्ता देव श्री गणपति महाराज का वरघोडा प.पू. लालजी महाराजश्री के देख-रेख में संत-हरिभक्त और श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ने परम्परागत ढोल-नगारे मंजीरा जैसे सुंदर सुर के द्वारा नंद संत रचित कीर्तन-भक्ति ओच्छव करते हुए दोपहर १ बजे श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर सेनिकले थे। जो नारणघाट मंदिर सांय कीर्तन आरती करके ठाकुरजी को नौका विहार कराके ७-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री संत-हरिभक्तो के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर वरघोडा वापस आया था।

यहाँ मंदिर के चौक में भव्य औच्छव हुआ था। बाद में ठाकुरजी की आरती की गयी। इस अवसर पर पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से स.गु. स्वामी हरिचरणदासजी, जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, भंडारी योगी स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत-पार्षद मंडनले

सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया गया था । (कोठारी शा. नारणमुनि स्वामी)

"मा" भागीरथी गंगा के सानिध्य में ऋषिकेश में श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ

भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेवि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर) के सुंदर मार्गदर्शन से ता. १७-९-१९ से ता. २३-९-१९ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ प.भ. परसोतमदास ईश्वरभाई पटेल (सोजा) परिवार ह. रमेशभाई, जीतुभाई, सुरेशभाई, सहयजमान प.भ. रतिभाई खीमजीभाई पटेल, प.भ. अरविंदभाई दोंगा, प.भ. सांकलचंद के. पटेल, प.भ. अरविंदभाई झवेरी, प.भ. घनश्यामभाई अंबालाल पटेल आदि हरिभक्त के यजमान पद से और पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से गंगा के गोद में मुमुक्षु हरिभक्तोने कथामृत का पान करके खूब कृतार्थ हुए । कथा के बीच स.गु. कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजीने सभा संचालन के साथ सम्पूर्ण श्रोता के लिये सुंदर व्यवस्था पामनी, प्रसाद, भोजन की अच्छी व्यवस्था की गयीथी । कथा के अवसर पर सगु. पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), पू. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) पू. जे.पी. स्वामी, पू. शा. कोठारी नारणमुनी स्वामी, शा. गोपाल स्वामी (प्रांतिज), महंत स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट), विश्वरुप स्वामी (मूली) तथा हरिद्वार महंतश्री मुकुंद स्वामी आदि संत आये थे । और सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

सम्पूर्ण आयोजन में प.भ. जयरामभाई कनाणी, रमेशभाई कोठारी (गवाडा), जीगर भावसर आदि अनेक भक्त तत्परता से सेवा प्रदान किये । रेलवे तथा हवाई मार्ग से आने वाले सभी भक्तो को सभी प्रकार की सुविधा प्रदान की गयी थी । ये गौण है । मुख्य तो भगवान का स्मरण कथा-वार्ता सुख मिला जो अलौकिक था ।

कथा के समय संतो द्वारा सभी यजमानश्रीओ, अग्रण्य हरिभक्तो, छोटी-बडी सेवा देने वाले हरिभक्त कालुपुर मंदिर के केशीयर ईश्वरभाई पटेल, कम्प्युटर संचालक श्री अतुलभाई कपुपरा, श्री जीगर भावसार, पंकज पंचाल, श्री नंदकिशोर आदि का सन्मान करके उसकी सेवा की प्रशंसा की गई । (कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी)

"मा" गंगा की गोद में (हरिद्वार) श्रीमद् भागवत पारायण

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के सुंदर मार्गदर्शन में और दियोदर (बनासकांठा) श्री स्वामिनारायण मंदिर के समस्त हरिभक्त के सुंदर यजमान पद से भागीरथी से गंगा मैया की गोद में हरि के द्वार में १६-९-१९ से २२-९-१९ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद से संगीत के सुमधुर वातावरण में पूर्ण हुआ था । हरिद्वार के प्राकृतिक वातावरण में बनासकांठा के कई मुमुक्षुओने श्रीमद् भागत कथा का श्रवण किये । तथा धन्य हुए । पूरे कथा के बीच सभा संचालन स.गु. शा. स्वा. गोपालजीवनदासजी (प्रांतिज) ने सुंदर रुप से किये थे । हरिद्वार में अपने मंदिर के महंत स्वामी स.गु. मुकुन्द स्वामी ने अच्छा सहयोग दिया था । कथा के अवसर पर पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) स.गु. महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), जे.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामी (मूली), गोपाल स्वामी (प्रांतिज), नारणघाट के महंत दिव्यप्रकाश स्वामी आदि कई संत आये थे । कोठारी शा. मुनि स्वामी और संत मंडल ने सुंदर रुप से व्यवस्था बनाये थे । (कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी - कापुपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर (राज.) पंचदशाब्दी महोत्सव एवम् बालधुन मंडल की स्वर्ण जयंती समारोह

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान तथा अहमदाबाद मंदिर में बिराजमान स्वरुपश्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के १०४ वाँ स्थापना दिन एवम् निजमंदिर में बिराजमान ठाकुरजी के १५ वें वार्षिक पाटोत्सव तथा जयपुर बालधुन मंडल की स्वर्ण जयंती (५० वर्ष) महोत्सव ता. ३१-८-१९ से २-९-१९ तक उल्लास पूर्वक मनाया गया । जयपुर अर्थात् संसार का 'पिंक सिटी' और कला और संस्कृति में अग्रिम स्थान रखता है ।

१०४ वर्ष पहले गजुरात से व्यापार हेतु आये वांकानेर के प.भ. मावजीभाई त्रिकमजीभाई परिवार जयपुर में स्थायी हो गये । श्री नरनारायणदेव देश के मंदिर के लिये उन्होने यह मूल्यवान जगह दी थी । इसके बाद खंभात, मेतपुर, कलादरा और पास के गाँवो के हरिभक्त यहाँ व्यापार के लिये स्थायी हुए । सत्संग का भी विकास हुआ । मेतपुर के अ.नि.स.गु. शास्त्री स्वामी कृष्णजीवनदासजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से ५० वर्ष पहले जयपुर में "बालधुन मंडल" की स्थापना की गयी थी । जिसके उपक्रम में ऐसे महोत्सव का आयोजन किया गया था ।

इस अवसर पर त्रिदिवसीय कथा पारायण यहाँ के सुंदर श्री गोविंददेवजी सत्संग भवन में हुआ ता । संत हरिभक्तो के विशाल उपस्थिति में पू. शास्त्री पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) पू. जगतप्रकाशदासजी स्वामी, भुज के पू. संत, पू. गोविंद स्वामी, वडताल आदि द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया । और मंगल आशीर्वचन से पूरा विस्तार प्रभावित हुआ . ता. ३१-८-१९ को ठाकुरजी के समक्ष अनेक प्राकृतिक पुष्पो की फूलफूलोत्सव मनाया गया था ।

कथा के पहले सत्र में भुज के देवविहारी स्वामीने कथामृत का पान कराया था । दोपहर दूसेर सत्र में स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) देव आचार्यश्री की महिमा बताये थे । शायं भव्य रासोत्सव हुआ । और ५ बजे जिसके दर्शन का सभी को आतुरता थी । ऐसे अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का शुभ आगमन हुआ था ।

ता. १-९-२०१९ को प्रातः ठाकुरजी को पुष्पाभिषेक संतो द्वारा सम्पन्न हुआ था । इसके बाद सुखे मेवे उत्सव का अलौकिक दर्शन कराया गया । प.पू. महाराजश्रीके कर कमलो द्वारा ठाकुरजीकी आरती उतारी गयी थी । इसके बाद प.पू. महाराजश्री कथा पंडाल में आये थे । संत-हरिभक्तोने सुंदर स्वागत सामैया किये थे । धर्मकुल पूजन के यजमान स्वामिनारायण परिवार वती प.भ. हरीशभाई प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किये थे। और अंत में पूरी सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी भक्तो को देव के साथ जुडकर रहे और भगवान को मुख्य रखे । देव में निष्ठा दृढ रखे और प्रेम भरा आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

मंदिर के हाल में समूह महापूजा का सुंदर प्रबन्धकिया गया था । स.गु. शा. स्वा. भक्तिकिशोरदासजी (सावदा) शास्त्र महिमा समझाये थे । शायं को शा. स्वा. हरिगुणदासजी ने सत्संग-सत्संगी की महिमा समझाये थे । निज मंदिर में बिराजमान बालस्वरुप श्रीहरिकृष्ण महाराजकी स्वर्ण तुला विधिवत रुप से मनाया गया । उमरेठ बाल मंडल द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था ।

ता. २-९-२०१९ के दिन ठाकुरजी के सामने मुखवासोत्सव मनोरथ का भव्य दर्शन कराया गया । प्रातः ८ बजे विश्वशांति के लिये श्रीहरियज्ञ को प्रारम्भ किया गया था । यज्ञ विधिमें जयपुर-प्रयाग मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी के साथ संत समुदाय मिला था । यजमान ब्रह्मदेव के साथ वैदिक मंत्रोचार के साथ यज्ञदेव को आहूती दिये थे । प्रातः प्रथम सत्र में कोठारी शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी (वडताल)ने श्रीहरि के नाम की महिमा बताये थे । शायं ठाकुरजी की जलयात्रा, नगरयात्रा, सजेरथ बगीचे, प्रेरणादायक प्लोट, हाथी, ऊँट, घोडा, पालखी, बैंड, भजन मंडलिया द्वारा ढोल नगारे के साथ १०८ कलश धारी बहनोने शोभायात्रा सभी का ध्यान देते है । इससे नगर में मार्गो पर भक्ति की खुशी फैल गयी थी ।

ता. ३-९-१९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के करमकलो द्वारा प्रस्थापित देवका १५ वर्ष पूर्ण होने पर ठाकुरजी के अंगपूजन पंचामृत अभिषेक श्रृंगार आरती की गयी थी । इसके बाद भगवान को छप्पन भोग अन्नकूट रखा गया । बाद में बाल मंडल ने स्वर्ण जयंती उत्सव के अवसर पर कीर्तन एवम् पारितोषिक वितरण किये थे । मुंबई, मेतपुर, भायंदर, सुरत, बैंगलोर से आये बाल मंडल के प्रमुखो का सन्मान किया गया ।

पूरे अवसर पर तीर्थो से आये संतो के आशीर्वाद और सेवा करने वाले यजमान हरिभक्तो का सम्मान किाय गया । यज्ञ, महापूजा, कथा, अभिषेक की विधिउमरेठ के विद्वान पंडित श्री मितुलभाई शुक्ल द्वारा पूर्ण किया गया ।

रसोई की सेवा शा. स्वयंप्रकाशदासजी तथा घनश्याम स्वामी (वडताल)ने सम्भाला था । संत विभाग में विष्णु स्वामी, विवेक स्वामी (अहमदाबाद) यज्ञ महापूजा में हरिप्रसाद स्वामी (जुनागढ), अन्नकूट, ठाकुरजी की सेवा परमेश्वर स्वामी (कालुपुर) ने सम्भाला था । सम्पूर्ण महोत्सव का सभा संचालन की सेवा शा. उत्तमचरण स्वामी (भुज) और शा. हरिगुण स्वामी (उमरेठ) ने सम्भाला था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की सेवा में स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी (अयोध्या) थे । नामी-अनामी दोनो देशो के संत प्रेरणादायक सेवा प्रदान किये थे । प.पू. महाराजश्री

के साथ अहमदाबाद मंदिर के कोठारी जे.के. स्वामी सेवा में लगे थे ।

पूरे महोत्सव में मुख्य यजमान पद पर अ.नि. प.भ. मनुबाई बापुभाई पटेल (मेतपुर) परिवार था । पारायण के मुख्य यजमान अ.नि. प.भ. सोमचंदभाई मगनभाई परिवार, महोत्सव के सहयजमान प.भ. जयेशभाई शांतिलाल पटेल परिवार आदि जयपुर के छोटे-बड़े हरिभक्तोने अनेक सेवा करके श्रीहरि और धर्मकुल की कृपा प्राप्त किये । साधु गुण सम्पन्न पू. महंत शा. स्वामी रामानुजदासजी (जयपुर) के अथक प्रयास से सभी हरिभक्ोत के सहयोग से पुरुषार्थ तन, मन और धन से सेवा किये थे .इसको भव्यता से मनाया गया था । आये हुए सभी संत-पार्षद और हरिभक्तने सेवा दी । वह कभी भूल नही सकते है । (पार्षद कमलेश भगत - कोठारीश्री प्रयागराज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकोलोनी पंचान्ह ज्ञानयज्ञ धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.भ. दासभाई की प्रेरणा से चातुर्मास में धर्मादा हेतु कथा प.भ. परेशभाई डोबरीया की तरफ से उनेक पिताश्री अ.नि. जयंतीभाई की पुण्य स्मृति में ता. २६-८-१९ से ता. ३०-८-१९ तक नंद संतो की जीवन कथा स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) और अन्तिम दिन को शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी (अहमदाबाद) ने रात्रि कथामृत का पान कराये थे ।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से गं.स्व. कहुंबाबेन रामजीभाई सुहागीया के यहमान पद से तथा अन्य छोटी-बड़ी बहनो की सेवा से ता. ४-९-१९ से ८-९-१९ तक दोपहर २ बजे से शाम ५ बजे के बीच सां. भारतीबा, रेखाबा, मसूरीबा, मधुबा और गीताबा के वक्ता पद से ज्ञान यज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया था । कथा में श्री घनश्याम जन्मोत्सव, लड्डू उत्सव, रासोत्सव, पालखी उत्सव आदि मनाया गया था । अन्तिम दिन समूह महापूजा और भोजन प्रसाद का सुंदर आयोजन था । पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आये थे । और यजमान बहनो का सन्मान करके सभी बहनो को आशीर्वाद दिये थे ।

पूजारी चंपाबा ने प.पू. गादीवालाश्री की पूजा किये थे । ३०-८-१९ अमावस्या को बहनोने अखंड ६ घंटे की धुन किये थे । ता. ४-९-१९ को प.भ. दासभाई के मातुश्री की स्मृति में ३ घंटे धुन और भोजन का प्रसाद दिया गया था । इस अवसर पर गांधीनगर से महंत स्वामी शा.पी.पी. स्वामी संत-मंडल के साथ आकर आशीर्वाद दिये । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर झूंडाल श्रीमद् भागवत रात्रिय पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से प.भ. नीतिनभाई चतुरभाई पटेल परिवार यजमान पद पर पवित्र मास श्रावण में श्रीहरि प्रसन्नार्थे ता. ६-८-१९ से ३०-८-१९ तक शा. स्वा. सत्यसागरदासजी (सुरेन्द्रनगर) के वक्ता पद से श्रीमद् भागवत रात्रीय पारायण का सुंदर आयोजन हुआ । प्रतिदिन अधिक संख्या में भक्तजन श्रवण करके धन्य हुए ।

कथा के अन्तर्गत पोथीयात्रा श्री कृष्ण जन्मोत्सव, रासोत्सव, धुमधाम से मनाया गया था । ता. १६-८-१९ को शायं सभी भक्तोने भोजन प्रसाद ग्रहण किये थे ।

श्री नरनारायण युवक मंडल सम्पूर्ण कथा के समय प्रेरणारुप सेवा प्रदान किये थे ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर में चातुर्मास कथा में वारा में आये कालुपुर मंदिर के स्वा. घनश्यामदासजीने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत भक्तचिंतामणी परचा प्रकरण का कथा अमृत का पान कराया गया । स्वामी केशवचरणदाजीने श्रीहरि की महिमा का गुणगान बताये । ठाकरजी के सामने सुंदर कलात्मक हिंडोला बनाकर भक्तो को दर्शन कराया गया । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव रात्रि १२ बजे आरती के साथ संपन्न की गयी ।

भाद्र सुद-११ जलझीलणी को ठाकरजी की भव्य नगरयात्रा नौका विहार कराके संत-हरिभक्तोने भजन किया तथा ठाकुरजी की आरती की गयी ।(मधुकर के. त्रिवेदी - कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा (हरिमंदिर) का १०३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और शा. पी.पी. स्वामी के

सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर, महेसाणा (पुराना मंदिर) में ठाकोरजी का पाटोत्सव अभिषेक-पूजन जेतलपुर मंदिर के महंत पू. के.पी. स्वामी, महेसाणा मंदिर के महंत नारायण स्वामी और शा. उत्तम स्वामी के वरद् हस्त से हुआ था।

इस अवसर पर आयोजीत सुंदर सत्संग सभा में शा. स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी (बीलीया), शा. स्वा. धर्मस्वरुपदासजी और शा. स्वा. धर्मनंदनदासजी (जेतलपुर) ने कथा-वार्ता की थी। डॉ. नरेन्द्रभाई डी. अभिषेक और संत-पूजन के यजमान थे और श्री भरतभाई मंगलदास भावसार अन्नकूट के यजमान थे। सभी हरिभक्तोने ठाकोरजी के दर्शन करके कथा और महाप्रसाद का लाभ लीया था।(हितेन्द्रसिंह राओल-महेसाणा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

हालार विभाग के हरिभक्तो द्वारा राजकोट में जलझीलणी उत्सव

मूलीधाम में विराजमान श्री राधाकृष्ण देव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मूली मंदिर के स.गु. शा. स्वा. नारायणप्रसाददासजी (सायला) की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल राजकोट (हालार देश) द्वारा भाद्रपक्ष सुद-११ झलझीलणी महोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था। ठाकुरजी का त्रंबा गाँव में त्रिवेणी संगममें जलविहार कराके पंचामृत अभिषेक संतो द्वारा विधिवत रुप से पूरा किया गया। अंत में अपने परम्परागत प्रणाली में संतो ने ठाकुरजी के साथ हरिभक्तो के साथ-साथ घर-घर गये थे। स.गु.शा. स्वा. नारायणप्रसाददासजी, शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, भानु स्वामी, रामप्रकाश स्वामी आदि संतोने जलझीलणी एकादशी का महात्म्य बताये। युवक मंडलदल प्रेरणादायक सेवा प्रदान किये थे। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल राजकोट - हालार जयेश टांक घनश्याम वरु)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेकलैन्ड फ्लोरिडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २४-८-१९ के दिन श्रीकृष्ण जन्मोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था। भजनकार श्री विनोदभाईने सुंदर राग में नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन और रास गरबा मनाया गया था। युवक-युवतियों ने मंदिर तथा ठाकुरजी का सिंहासन सुंदर रुप से सजाये थे।

महंत स्वामीने श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा द्वारा सभी को हरिकालीन हरिभक्तो का उदाहरण बताये थे। प्रमुखश्री नवीनभाई यह कथा सभी लोग सुन सके यू-ट्युब पर लिंक रखे है। रात्रि के १२ बजे श्रीकृष्णजन्मोत्सव की आरती उल्लास से मनाये थे।(रसिक शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में २१ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से हमारे शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर के २१ वें वार्षिक पाटोत्सव को उल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी के वक्ता पद से पूर्ण की गयी। २१ घंटे की अखंड धुन, पोथीयात्रा, श्रीहरियज्ञ, श्री ठाकुरजी का महाभिषेक, छप्पन भोग अन्नकूट आदि का कार्यक्रम पूर्ण किया गया था। रक्तदान कैम्प का सुंदर आयोजन किया गया था। सभा में तीर्थो से आये पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर), पू. स.गु. शा. स्वा. निर्गुणदासजी, पूजारी ब्र. के.पी. स्वामी, श्री वल्लभ स्वामी, ब्रजवल्लभ स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) नीलकंठ स्वामी, ब्र.स्वा. पूर्णानंदजी उसी प्रकार कथाकार श्री योगेन्द्रभाई भट्ट आदि सभीने श्रीहरि की महिमा का गुणगान किये।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. जीवणभाई चौधरी, जीतीबेन चौधरी (बालवा) परिवार, पारायण के यजमान श्री जीवणभाई, सीताबेन, अ.नि. श्री बलवंतराय और शकुन्तलाबेन कवि के मोक्ष हेतु श्री बिपीनभाई, नीलाबेन कवि, प्रशांतभाई, ध्रुव कवि अभिषेक के मुख्य यजमान हरिभाई पटेल, सहयजमान मनोजभाई ब्रह्मभट्ट, अन्नकूट के मुख्य यजमान राकेशभाई, सहयजमान हरेशभाई, वरुणभाई, अभयभाई त्रिवेदी आदि परिवारोने लाभ उठाये थे। पूजारी संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार

अभि,ेक विधिवत रुप से पूर्ण किये थे । हजारो हरिभक्त कथा-भजन का श्रवण करके धन्य हुए ।(वसंत त्रिवेदी)

ह्यूस्टन (टेक्सस) श्री स्वामिनारायण मंदिर में कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से अपने ह्यूस्टन हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर १९ अगस्त से २७ अगस्त तक शायं ६ बजे से ९ बजे तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकथा सुव्रत स्वामी के वक्तापद से पूर्ण हुई । प्रतिदिन हरिभक्तो को प्रसाद रुपी भोजन यजमान द्वारा खिलाया गया था । सोमवार शायं उल्लास पूर्वक पोथीयात्रा निकाली गयी थी ।

अष्टलक्ष्मी मंदिर में वहाँ के पूजारी द्वारा आरती प्रसाद के बाद रास गरबा रखा गया था । कथा में आने वाले प्रसंग को उल्लास पूर्वक मनाया गया । यजमानो की सेवा की गुणगान किया गया था ।(प्रवीण शाह)

एलन टाउन श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा महंत शा. धर्मकिशोर स्वामी के मार्गदर्शन से अपने हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर एलन-टाउन में श्रावण वद-८ को श्री कृष्ण जन्मोत्सव का सुंदर प्रबन्धकिया गया था । सर्व प्रथम युवा भक्तोने कीर्तन-भजन किये थे । महंत स्वामी श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की कता सुनाये थे । इस अवसर पर हरिभक्तोने यजमान के साथ सहयजमान बनकर सेवा प्रदान किये थे । महंत स्वामीने सेवा करने वाले यजमानो को सम्मान प्रदान किये ।

सभी को फलाहार रुप में प्रसाद खिलाया गया था । रात्रि १२ बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती उल्लास पूर्वक मनाई गयी थी । प्रेसि. श्री भीखाभाई भविष्य में होने वाली उत्सवो की जानकारी दिये थे । ठाकुरजी की आरती करके सभी ने प्रसाद ग्रहण किया ।(प्रवीण शाह)

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री कृष्ण जन्मोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत शा. अजयप्रकाशदासजी और भरत भगत की प्रेरणा से अपने हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में १४ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महारजाश्री के करकमलो द्वारा श्री सूर्यनारायण भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण की गयी । उसी प्रकार श्रावण वद-४ को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था ।

सभा में युवक हरिभक्तो द्वारा भजन-कीर्तन किया गया । आज के अवसर के यजमान और रसोई में सेवा प्रदान करने वालो की प्रशंसा किया गया था । सभी ने फलाहार रुप में प्रसाद खिलाया गया था । रात्रि में १२ बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव आरती उल्लास पूर्वक किया गया था । इस में कई हरिभक्तोने दर्शन का लाभ लिये थे ।(प्रविण शाह)

पारसीप में श्री हिन्दू स्वामिनारायण मंदिर में कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा सभी हरिभक्तो के प्रबन्धसे अपने पारसीप के हिन्दू श्री स्वामिनारायण मंदिर में पवित्र श्रावण मास में शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने सभी श्रोता लोगो को भगवान श्रीहरि के लीलाचरित्र के कथा का रसपान कराये ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और नंद महोत्सव भी भव्य से मनाया गया । मटकी फोड कार्यक्रम अपने हरिभक्तो के बच्चो ने सुंदर रुप से मनाया था । सेवा करने वाले यजमान, स्वयं सेवको, रसोई में सेवा देने वाले भाई-बहनो को सम्मानित किया गया था ।

मेहमान हरिभक्तो को फूलहार पहनाकर सन्मान किया गया था । अन्त में ठाकुरजी की थाल-आरती नित्य-नियम आदि करके सभी लोगो को प्रसाद प्रदान किया गया । (प्रविण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात)पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) कालुपुर मंदिर में परंपरागत समूह चोपडा पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) कांकरिया मंदिर में लाभ पांचम के शुभ दिन पाटोत्सव के अवसर पर बालस्वरुप कष्टभंजनदेव की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) पडुस्मा गाँव में कथा पारायण का रसपान करते हुए सभी हरिभक्त ।(४) महादेवपुरा (शाला) नूतन मंदिर की खात विधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(५) आजोल मंदिर में पारायण के प्रसंग निमित्ते सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(६) छपैया मंदिर में कथा प्रसंग निमित नारायण सरोवर की समूह आरती ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

3

4

१) नूतन वर्ष के पावन दिन पर सर्वोपरी श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती उतारते हुए प.पू. मोटा महाराजश्री और शणगार आरती उतारते हुए प.पू. श्री आचार्य महाराजश्री और प.पू. श्री लालजी महाराजश्री । (२) सीनेमेन्शन (अमेरीका) मंदिर में नूतन वर्ष के अन्नकूट दर्शन । (३) शिकागो (अमेरिका) मंदिर के २१ वे पाटोत्सव निमित्त सभा में संतो द्वारा कथा-वार्ता । (४) सीडनी (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में शरद पूनम मनाते हुए हरिभक्त और नूतन वर्ष अन्नकूट दर्शन ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ निश्रा में

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका, सत्संग सेवा स्मृति महोत्सव

दि. ३०-१२-२०१९ से दि. ०५-०१-२०२०

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in

Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104

Follow Us @ nndkalupurmandir